विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 5 : नई दिल्ली : 27 अप्रेल से 3 मई 2018

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण विशाखापट्टनम् का दसदिवसीय प्रवास सानंद सुखसातापूर्वक परिसंपन्न कर चेन्नई की ओर प्रस्थित हो गए हैं। भारत के सर्वाधिक गर्म प्रदेशों में से एक राज्य के रूप में प्रसिद्ध आंध्रप्रदेश में भयंकर गर्मी के मौसम में यात्रा करना आचार्यप्रवर के दृढ़ मनोबल से ही संभव हो पा रहा है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार पूज्यप्रवर आगमी २८ मई को विजयवाड़ा पधार जाएंगे। आचार्यप्रवर आंध्रप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में विहरण करने के उपरान्त जुलाई के प्रथम सप्ताह में तमिलनाडु में मंगल प्रवेश करेंगे।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आंध्रप्रदेश में

सागर और नौसेना की भूमि पर लहराया महासागर, छाई धवल सेना

१६ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः विशाखापट्टनम् के बाहरी क्षेत्र पी.एम. पालम से शहर के भीतरी भाग की ओर प्रस्थान किया। विशाखापट्टनम के श्रद्धालु सूर्योदय से पूर्व ही बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंच गए। पूज्यप्रवर डॉ. वाइ.एस. राजशेखर रेड्डी क्रिकेट एसोशिएसन के निकट से मुख्य मार्ग पर पधारे। इस मार्ग के दोनों और पहाड़ स्थित थे। इन पहाड़ों पर सैंकड़ों घर बने हुए थे। यद्यपि सूर्य आज पीछे की ओर स्थित था, किन्तु उसकी तीखी चुभन शरीर को पसीने से तरबतर बना रही थी।

विधायक श्री वेल्लमगुड़ी रामकृष्ण बाबू तथा विधान परिषद् सदस्य श्री पी. माधव ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

सागर (बंगाल की खाडी) के किनारे बसे विशाखापट्टनम् में आज एक महासागर का पावन प्रवेश हो रहा था तो जनसैलाब और श्रद्धा-भक्ति के पारावार का उमड़ना भी स्वाभाविक था। आचार्यप्रवर के स्वागत में हजारों लोग सोत्साह उपस्थित थे। अपने आराध्य के प्रथम आगमन से स्थानीय श्रद्धालुओं का उल्लास चरम पर था तो शांतिदूत महातपस्वी का स्वागत करने को अन्य जैन एवं जैनेतर लोग भी आतुर थे। पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय जनता ने पलक पांवड़े बिछा दिये। भारतीय नौसेना के पूर्वी कमांड के इस केन्द्र में तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता और उनकी धवल सेना का मंगल प्रवेश नयनाभिराम दृश्य उपस्थित कर रहा था। स्थानीय जनता इस दृश्य को उत्सुकता के साथ निहार रही थी। उत्सुकता ज्योंही यत्किंचित परिचय के रूप में परिणत हो रही थी, अनजान लोगों के हाथ स्वतः जुड़ रहे थे और सिर श्रद्धा से प्रणत बन रहे थे। गत वर्ष भारत के तीसरे स्वच्छ शहर का खिताब पाने वाला यह शहर परम निर्मल व्यक्तित्व के चरण स्पर्श से पावन होकर धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

चन्दना मोहना फंक्शन हॉल के निकट से प्रांरभ हुए भव्य स्वागत जुलूस में अग्रवाल समाज, माहेश्वरी समाज, स्थानकवासी समाज, मूर्तिपूजक समाज, विप्र समाज, तेलगू समाज, राजस्थानी सांस्कृतिक मंडल, श्याम मंदिर कमेटी आदि संस्थाओं/समाजों के सैंकड़ों लोग भी सोत्साह संभागी बने हुए थे। पूज्यप्रवर भव्य स्वागत जुलूस के साथ इंटिग्रल इंस्टिट्यूट एंडवास मेनेजमेंट (आई.आई.ए.एम.) में पधारे। पूज्यप्रवर का विशाखापट्टनम् का दस दिवसीय (२५ अप्रेल की रात्रि के सिवाय) प्रवास यहीं हुआ। आज का कुल विहार करीब १० कि.मी. का रहा।

वॉलटेयर और वाइजाग नाम से भी प्रसिद्ध विशाखापट्टनम् एक सुन्दर और स्वच्छ शहर है। प्राप्त जानकारी

के अनुसार भारतीय नौसेना के पूर्वी कमांड के इस केन्द्र में जलयान बनाने का कारखाना भी है। तीन ओर पहाड़ और एक ओर समुद्र से घिरे हुए इस शहर की रमणीयता पर्यटकों को अनायास खींच लाती है। यहां का बन्दरगाह प्राकृतिक है। यहां स्थित 'कुरसुरा पनडुब्बी संग्रहालय' पर्यटकों के सर्वाधिक आकर्षण का केन्द्र है। भारत सरकार द्वारा स्थापित इस संग्रहालय में 'कुरसुरा' नामक पनडुब्बी रखी गई है। करीब ३०० फीट लम्बी और १६५० टन वजन वाली यह पनडुब्बी सोवियत संघ ने सन् १६६६ में भारत को दी थी। पानी में करीब ३०० मीटर तक भीतर जाने की क्षमता रखने वाली इस पनडुब्बी में ७५ लोग एक साथ रह सकते हैं। शत्रुसेना के जहाज और पनडुब्बी पर वार करने के लिए इस पनडुब्बी में एक साथ २२ 'तारपीड़ो' लगने की क्षमता है। इस पनडुब्बी का प्रयोग सन् १६७१ में हुए भारत-पाक युद्ध में किया गया था और सन् २००२ में इसे म्यूजियम के रूप में स्थापित किया गया। समुद्र से इसे म्यूजियम के स्थान तक लाने में करीब १८ माह का समय लगा और ५५ मिलियन रुपये खर्च हुए। इस म्यूजियम के सामने विमान संग्रहालय भी स्थित है। सन् २०१७ में स्थापित इस संग्रहालय में नौसेना का टी.यू.-१४२ एम. विमान स्थापित है। नौसेना में करीब २६ साल तक सेवा देने के पश्चात् सेवानिवृत्त हुए इस विमान का कार्य शत्रु सेना की पनडुब्बी की खोजकर उसे नष्ट करना था।

विशाखापट्टनम् में पूज्यप्रवर का दसदिवसीय प्रवास होगा, स्थानीय लोगों ने इसकी कल्पना भी नहीं की थी। इसलिए उन लोगों की प्रसन्नता भी आधिक्य लिए हुए थी। इस प्रवास में तीन-तीन महनीय आयोजनों (अक्षय तृतीया, आचार्यप्रवर का जन्मोत्सव व पट्टोत्सव) का मिलना 'सोने में सुगंध' कहावत का साक्षात् उदाहरण है।

प्रवास स्थल के सामने स्थित 'ए. एस. राजा ग्राउण्ड' में निर्मित विशाल महाश्रमण समवसरण में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी ने वक्तव्य हुए।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जीवन में प्रतिकूल स्थितियां भी आ सकती हैं। सम्मान होता है तो अपमान भी हो सकता है। प्रशंसा होती है तो निंदा भी हो सकती है। सुख मिलता है तो दुःख भी मिल सकता है। लाभ होता है तो अलाभ भी हो सकता है। आदमी को द्वन्द्वात्मक स्थितियों में भी सम रहना चाहिए। उसे अपनी अगली गति के बारे में भी ध्यान देना चाहिए। भविष्य को सामने रखकर वर्तमान जीवन को ढालने का प्रयास करना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो यह जीवन और आगामी जीवन दोनों अच्छे बन सकते हैं।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से सैंकड़ों विशाखापट्टनमवासियों ने अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की।

आचार्यश्री महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति-विशाखापट्टनम् के अध्यक्ष श्री तिलोकचंद हिरावत, स्थानीय तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री सिद्धकरण आंचलिया, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री मुकेश नाहटा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सज्जनदेवी हिरावत ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपने आस्थासिक्त विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। स्थानीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री मनोज सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए अपने साथियों के साथ गीत का संगान किया। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्यों ने परिसंवाद के माध्यम से अपने आराध्य का अभिनंदन किया। विशाखापट्टनम् के तेरापंथ समाज ने सामूहिक रूप में गीत को प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

नागरिक अभिनंदन कार्यक्रम में मुखरित हुए आस्थासिक्त भाव

१७ अप्रेल। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और

साध्वीवर्याजी के उद्‌बोधन हुए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आठ कर्मों के कारण आत्मा संसार में भ्रमण करती रहती है, जन्म-मरण करती रहती है। आज तक हम सबकी आत्मा ने अनंत-अनंत जन्म ग्रहण कर लिए और अनंत-अनंत बार मृत्यु का वरण कर लिया। महर्षि इस संसार को तर सकते हैं। शरीर अपने आप में एक नौका है। मनुष्य इस शरीर से साधना कर मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। मोक्ष का मुख्य साधन है संयम और तप की साधना। यह साधना शरीर से हो सकती है। इसलिए शरीर भी संसार को तरने का साधन है। जब तक यह शरीर सक्षम है, तब तक धर्म कर लेना चाहिए। जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, बीमारी जब तक बढ़ न जाए, इन्द्रिय शक्ति जब तक क्षीण न हो जाए, तब तक पुरुषार्थ साध्य धर्म कर लेना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा-'मैं तो साधु-साध्वियों के लिए भी एक संदेश देना चाहता हूं कि जब तक शरीर सक्षम है, तब तक यथासंभव सेवाकेन्द्रों आदि में सेवा देने की भावना रखो, ताकि बाद में कहीं स्वयं सेवाग्राही बन जाओ तो सेवा करने से वंचित न रहो। मन में यह भावना रखनी चाहिए कि शरीर की सक्षमता की स्थिति में जितनी सेवा कर सकें, कर लें।'

आज के कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के नागरिक अभिनंदन का भी उपक्रम रहा। आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'विशाखापट्टनम् में हमारा प्रवास हो रहा है। नागरिक अभिनंदन समारोह में मैं यहां के नागरिकों को कुछ देना चाहूंगा। मैं नागरिकों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करने का आह्‌वान करता हूं। जिन्होंने कल संकल्प ग्रहण नहीं किए, वे चाहें तो आज उन्हें वे संकल्प ग्रहण करवाए जा सकते हैं।' कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न समाजों, समुदायों के सैंकड़ों लोगों ने आचार्यप्रवर के आह्‌वान पर अपने स्थान पर खड़े होकर संकल्पत्रयी स्वीकार की।

नागरिक अभिनंदन समारोह के अंतर्गत विशाखापट्टनम् की प्रवास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष श्री कमल बैद, राजस्थानी सांस्कृतिक मंडल के अध्यक्ष श्री अनिल गुजरानी, श्री कन्हैयालाल नाहटा, तेरापंथ कन्या मंडल की संयोजिका सुश्री शिखा विनायकिया और श्री हनुमान बेगवानी ने अपने आराध्य के स्वागत में अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

सुधर्म जैन समिति के अध्यक्ष श्री प्रवीण सांखला ने कहा--'आंध्रप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री अमरावती को 'हेप्पी सिटी' बनाने की योजना बना रहे हैं। परम पूज्य गुरुवर आचार्यश्री महाश्रमण के पदार्पण से हमारा शहर विशाखापट्टनम् तो हेप्पी सिटी बन ही गया और भविष्य में भी बना रहेगा। ऐसे महापुरुष का सान्निध्य पाकर हम धन्य हैं। यह हम शहरवासियों की असीम पुण्याई है कि आचार्यश्री का यहां दस दिनों का प्रवास होगा और आपके सान्निध्य में यहां तीन-तीन बड़े उत्सव समायोजित होंगे। गत वर्ष स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत भारत में विशाखापट्टनम् का स्थान तीसरा रहा। आचार्यश्री के प्रवास का लाभ उठाकर हम अपनी आत्मा को स्वच्छ बना सकते हैं।'

विशाखापट्टनम् माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल मंत्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'हम विशाखापट्टनमूवासियों के लिए यह अत्यन्त गौरव और हर्षोल्लास का प्रसंग है कि परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी का यहां पदार्पण हुआ है। मैं माहेश्वरी सभा और माहेश्वरी समाज के सभी सदस्यों की और से पूज्यप्रवर का हार्दिक स्वागत अभिनंदन करता हूं। आपके पदार्पण से हमारे शहर का कण-कण आनंदित है। आपका पदार्पण हमारे प्रबल पुण्य का सूचक है। आपका दसदिवसीय प्रवास हमारे जीवन के लिए दिशा दर्शन बनेगा, ऐसा विश्वास है।'

अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष डॉ. नारायण अग्रवाल ने कहा--'परम वंदनीय आचार्यश्री महाश्रमण

को मैं अपनी ओर से और अपने पूरे समाज की ओर से शत-शत नमन करते हुए उनका स्वागत और अभिनंदन करता हूं। आपने इतनी कष्टमय यात्रा कर हमारे शहर विशाखापट्टनम् की धरती को पावन किया है। आपके पदार्पण से हमारा शहर कृतकृत्य हो गया। विश्व बंधुत्व, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और सर्वधर्म समभाव की जो स्नेहधारा आप अपने मार्मिक संदेशों के माध्यम से प्रवाहित कर रहे हैं, वह आज के युग की आवश्यकता है एवं पूरे समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए लाभकारी है।

पूज्यप्रवर! मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही हैं कि हमारे कई अग्रवाल बंधु आपसे गुरुधारणा लेकर लाभान्वित हुए हैं और वे अपने जीवन को सर्वरूपेण सार्थक कर रहे हैं। आपश्री की कृपा हम सब पर सदा सर्वदा बनी रहे।'

विशाखापट्टनम् महावीर इन्टरनेशनल स्कूल के अध्यक्ष श्री महेन्द्र तातेड़ ने कहा--'मैं पिछले पचीस सालों से विशाखापट्टनम् में रह रहा हूं, किन्तु जैन समाज का इतना भव्य आयोजन पहली बार हुआ है। मैं महावीर इन्टरनेशनल की ओर से आपका सादर अभिनंदन करता हूं'

मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन ने कहा--'विशाखापट्टनम् की भूमि आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरण स्पर्श से पावन बन गई। आपका आशीर्वाद हमें सदा प्राप्त होता रहे।'

गुजराती समाज के अध्यक्ष श्री गंगारामजी पटेल ने कहा--'विशाखापट्टनम् में पधारे हुए अहिंसा प्रणेता शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं अपने समाज की ओर से बहुत-बहुत स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं। आचार्यश्री के दर्शन और प्रवचन से हम अपने जीवन की समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।'

विप्र सभा के अध्यक्ष श्री भगवानाराम शर्मा ने कहा--'परम पूज्य, प्रातः स्मरणीय आचार्यश्री महाश्रमणजी का विशाखापट्टनम् में पदार्पण हम सबके लिए अहोभाग्य का विषय है। हमारे शहर के सभी नागरिक आपके दर्शन मात्र से धन्य हो गए, कृतकृत्य हो गए। आप हम सबको अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाने वाले मार्गदर्शक हैं। मैं विशाखापट्टनम् के विप्र समाज की ओर से आपका बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं। आपका आशीर्वाद हम सब पर बना रहे।'

नागरिक अभिनंदन समारोह का संचालन विशाखापट्टनम् प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री विमलजी कुण्डलिया तथा श्री श्रेयांस नाहटा ने किया।

अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन

१८ अप्रेल। वैशाख शुक्ला तृतीया। अक्षय तृतीया का पावन अवसर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में हजारों लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारंभ करीब ८.१५ बजे परमपूज्य आचार्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ।

कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में 'जय जिनेन्द्र की जय हो' गीत का संगान करते हुए भगवान ऋषभ के जीवनवृत्त को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया। मुख्यनियोजिकाजी ने अपने वक्तव्य में वर्षीतप के महत्त्व को प्रस्तुति दी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में अक्षय तृतीया के महत्त्व और भगवान ऋषभ के वर्षीतप से संबंधित घटनाक्रम को विवेचित किया। मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में 'आयो आदीश्वर रे वर्षीतप को पारणोजी' गीत का संगान करते हुए उसकी व्याख्या की।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'वर्तमान अवसर्पिणी के आद्य तीर्थंकर भगवान ऋषभ हुए। उन्होंने गार्हस्थ्य का भी जीवन जीया। उनके संतानोत्पति भी हुई। मैं उनके जीवन को बहु अंगीण जीवन के रूप में देख रहा हूं। वे एक समाज नेता थे, राजनेता थे और धर्मनेता थे। उन्होंने समाज

को ऐसे समय में नेतृत्व दिया, जब उनका कोई दूसरा विकल्प भी संभवतः नहीं था। उन्होंने लोकानुकंपा से अपना कर्त्तव्य मानते हुए जनता को असि, मसि और कृषि जैसे सावद्य कार्यों का प्रशिक्षण दिया। वे एक योग्यता युक्त नेता थे। उनके पास विशिष्ट ज्ञान था। वे कुशल समाज नेता थे तो वे एक कुशल राजनेता भी थे। राष्ट्र के सुव्यवस्थित संचालन के लिए राजनीति आवश्यक होती है। राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है न्याय नीति-दण्डसंहिता। दण्डसंहिता के बिना राष्ट्र की व्यवस्था गड़बड़ा सकती है। जहां न्यायसंहिता कमजोर बन जाती है, वहां राष्ट्र भी कमजोर बन जाता है।

भगवान ऋषभ अध्यात्म जगत के सर्वोच्च नेता भी बने। उन्होंने मोक्ष मार्ग बताया। वे वर्षीतप करने वालों के आदर्श हैं। उन्होंने जैसा वर्षीतप किया, वैसा वर्षीतप तो वर्तमान में करना बहुत-बहुत मुश्किल अथवा असंभव है। अक्षयतृतीया समारोह भगवान ऋषभ के साथ जुड़ा हुआ एक महत्त्वपूर्ण पर्व है। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का सुन्दर ग्रंथ है- ऋषभायण। उसके माध्यम से अनेक जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं। भगवान ऋषभ इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर हुए। उन्होंने समाज नीति और राजनीति के लिए कार्य किया और बाद में वे धर्म नीति के साथ जुड़ गए। हम प्रभु ऋषभ को श्रद्धा के साथ नमस्कार करते हैं।'

(पूज्यप्रवर ने वर्षीतप के वर्तमान स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए उसके साधनाक्रम की अवगति प्रदान की।)

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'वर्षीतप के साथ यह साधनाक्रम जुड़ जाता है तो मानों वर्षीतप भी शोभायमान हो जाता है। मानों यह तो वर्षीतप का आभूषण है। इससे वर्षीतप और ज्यादा गरिमापूर्ण और लाभप्रद बन जाता है।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'मैंने सुमंगल साधना की बात बताई थी। जो लोग कुछ विशेष संयम साधना करना चाहें, वे सुमंगल साधना के साथ जुड़ें। इस विषय में जिज्ञासा-समाधान आदि के लिए पुरुष लोग मुख्यमुनि महावीर और बाइयां साध्वीवर्या संबुद्धयशा से संपर्क कर सुमंगल साधना की विधि जान सकते हैं। श्रावक-श्राविकाओं को यथासंभव इसे स्वीकार करना चाहिए। इससे जुड़कर एक सीमा तक काफी अच्छी साधना की जा सकती है।'

परम पूज्यप्रवर ने गत वर्ष वर्षीतप करने वालों को आलोयणा स्वरूप ५१-५१ सामायिक करने की प्रेरणा प्रदान की तथा आगामी वर्ष में वर्षीतप करने के इच्छुक लोगों को वर्षीतप का प्रत्याख्यान करवाया।

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त भगवान ऋषभ की स्तुति में आचार्य मानतुंग द्वारा रचित संपूर्ण 'भक्तामर' का पाठ किया। विशाखापट्टनम् प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री विमल कुण्डलिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। वर्षीतप करने वाले ६३ तपस्वियों ने पूज्यप्रवर को इक्षुरस बहराकर अहोभाव की अनुभूति की। तामरम्- चेन्नई की श्रीमती विमलादेवी मूथा ने आज तैतीसवें वर्षीतप का पारणा किया, जो विशाखापट्टनम् में पारणा करने वाले तपस्वियों में सर्वाधिक था।

सागर किनारे लहराया महासागर

१६ अप्रेल। करुणा महासागर परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः भ्रमण हेतु प्रवास स्थल से करीब डेढ कि.मी. दूर समुद्र के परिपार्श्व में पधारे। ऐसा लग रहा था एक सागर से मिलने महासागर आया है। ज्वार के कारण समुद्र में उछाल मारती लहरों को देखकर ऐसा लग रहा था, मानों वह करुणा महासागर को देखकर खुशी में झूम रहा हो। दूर-दूर तक पानी ही पानी दृष्टिगोचर हो रहा था और कुछ कि.मी. दूर खड़े कुछ विशाल जहाज भी अस्पष्ट रूप में दृश्यमान हो रहे थे। इस छोर पर कई नावें भी खड़ी थीं, जो ज्वार के साथ-साथ उछल रही थीं। पूज्यप्रवर ने वहां खड़े-खड़े 'सागरवर गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' का जप किया। पूज्यप्रवर समुद्र के किनारे पर स्थित 'टेनेटी' पार्क में पधारे और वहां कुछ भ्रमण किया। इस पार्क के

सामने की ओर कैलाशगिरि के रूप में अभिहित पर्वत स्थित है। इस पर्वत को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। 'रोप वे', 'टॉय ट्रेन', प्राकृतिक रमणीयता आदि इस पर्वत के आकर्षण हैं। पूज्यप्रवर करीब चार कि.मी. भ्रमण कर पुनः प्रवास स्थल में पधारे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्‌बोधन हुआ। पूज्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त साध्वीवर्याजी का वक्तव्य हुआ।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'नींद और जागरण हमारे जीवन में गहराई से जुड़े हुए हैं। इन दोनों में विवेक की आवश्यकता होती है। नींद लेना बुरा नहीं है, किन्तु अनुपयुक्त समय में नींद लेना कहीं अनुपयुक्त हो सकता है। नींद तो जीवन के लिए आवश्यक तत्त्व होता है। साधना की दृष्टि से जागना एक बात है, किन्तु अनिद्रा की बीमारी अच्छी नहीं होती। जिसके जीवन में सदाचार होता है, वह तनावमुक्त रह सकता है और उसे नींद भी अच्छी आ सकती है।

शरीर से जागना एक बात है। उससे अधिक महत्वपूर्ण है धर्म की दृष्टि से जागना। आदमी को धार्मिक दृष्टि से जागृत रहकर यथासंभव पापों से बचना चाहिए। उसे अध्यात्म की दिशा में उन्नति करने का प्रयास करना चाहिए। यह प्रयास उसके लिए हितकर सिद्ध हो सकता है।'

दिल्ली राज्य में सरकार के गृहमंत्री आदि कई पदों पर कार्यरत श्री सत्येन्द्र जैन ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान उन्होंने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'मैं अपने आप को सौभाग्यशाली समझता हूं कि मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी के पुनः दर्शन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मुझे गौरव है कि 'जैन' ब्राण्ड होने का कारण मैं चुना गया। मैं आचार्यश्री को यह विश्वास दिलाता हूं कि इस ब्राण्ड की गरिमा कभी कम नहीं होने दूंगा।'

सुखी और सुन्दर परिवार के सूत्र

२० अप्रेल। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और साध्वीवर्याजी के उद्‌बोधन हुए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--' परिवार सुन्दर भी हो सकता है और वह असुन्दर, कष्टयुक्त भी हो सकता है। गृहस्थ पारिवारिक जीवन जीता है। परिवार में अनेक सदस्य हो सकते है। एक परिवार सुन्दर भी हो सकता है और दूसरा परिवार असुन्दर भी हो सकता है। जिस परिवार में सहन करने की वृत्ति होती है, वह परिवार स्वर्गतुल्य हो सकता है। जिस परिवार में सहनशीलता नहीं होती, बात-बात में कलह होता है, मारपीट होती है, वह परिवार अशान्तिमय बन सकता है, नरक तुल्य बन सकता है।

शादी गार्हस्थ्य की एक प्रकार की दीक्षा होती है। वह जिन्दगीभर का संबंध होता है। उसे तलाक के रूप में छोड़ देना परिवार पर कुछ धब्बा लगाने वाली स्थिति हो सकती है। ऐसी स्थितियां परिवारों में न बनें, यह काम्य है। कलह को पनपने का मौका न मिले। कभी कलह हो जाए तो उसे जल्दी समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। औचित्यानुसार कभी-कभी बड़ों को भी सहना होता है, उदारता का प्रयोग करना होता है। पारिवारिक जीवन में समरसता और शांति रहे, इसके लिए गुस्से पर नियंत्रण भी अपेक्षित होता है। परस्पर कटुता न हो, न रहे। गुस्सा प्रीति का नाश करने वाला होता है।

परिवार में तुच्छ स्वार्थ हावी न हो। जहां व्यक्ति केवल अपना हित देखता है, वहां परिवार के दूसरे सदस्य दूर हो सकते हैं। जिस परिवार में परस्पर हितैषिता का भाव होता है, तुच्छ स्वार्थ हावी नहीं होता, वह परिवार सुन्दर होता है।

परिवार नशामुक्त रहना चाहिए। शराब जैसी नशीली वस्तुओं का प्रयोग परिवार में नहीं होना चाहिए। परिवार का मुखिया इस बात के लिए जागरूक रहे कि उनके परिवार में नशे को पनपने का मौका

न मिले।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी परिवारों में शनिवार को सायं सात से आठ बजे के बीच सामायिक का अनुष्ठान भी यथासंभव होना चाहिए।

इस प्रकार सहिष्णुता, निस्वार्थ भाव, नशामुक्तता और सामायिक का अभ्यास हो तो परिवार सुन्दर बन सकता है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'हरियाणा से दीक्षार्थी मुकुल पहुंचा है। हमने इसकी दीक्षा मुनिश्री किशनलालजी के द्वारा तोषाम में होने का निर्देश दे रखा है। छोटी उम्र में दीक्षा का भाव जाग जाना अच्छी बात है। संयम जीवन में मन रम जाए तो संयम जीवन देवलोक समान होता है। मुकुल को अच्छे संकल्प के साथ दीक्षा ग्रहण कर खूब विकास करना है। यह प्रयास रखना है कि गुस्सा ज्यादा न आए। सहिष्णुता, उपशम, विनय, सेवाभावना, ज्ञान-ध्यान में रुचि आदि सद्गुण जीवन में रहते हैं, संयम जीवन सुखद हो सकता हैं। खूब अच्छा विकास हो, अच्छी साधना हो। मंगलकामना।'

दीक्षार्थी मुकुल ने पूज्यचरणों में अपने आस्थासिक्त भावसुमन अर्पित किए। विशाखापट्टनम् प्रवास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष श्री कमल बैद ने दीक्षार्थी मुकुल का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए उसके प्रति मंगलभावनाएं व्यक्त कीं।

आज मोहम्मद अमीर नामक एक व्यक्ति आचार्यप्रवर की पावन सन्निध में पहुंचा। उसने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'एक सूफिया का सलाम स्वीकार करें और आपकी सन्निधि में कुछ देर ध्यान करने की मंजूरी दें। 'आचार्यप्रवर ने उसे अनुमति प्रदान की तो उसने कुछ समय तक पूज्यप्रवर के सान्निध्य में बैठकर ध्यान किया।

तेरापंथ भवन के लिए करीब बारह कि.मी. का परिभ्रमण

२१ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर आज प्रातः अपने प्रवास स्थल से करीब ५.६ कि.मी. दूर स्थित तेरापंथ भवन विशाखापट्टनम् की ओर प्रस्थित हुए। आसमान में बादल छाए हुए थे। इस कारण सूर्य के आतप से अनायास बचाव हो रहा था, किन्तु वातावरण में व्याप्त उमस शरीर को पसीने से नहला रही थी। कहीं-कहीं हल्की बूंदाबांदी भी हुई। पूज्यप्रवर ने कुछ क्षण रुककर प्रतीक्षा भी की और वर्षा थमने के उपरान्त पुनः प्रस्थित हुए। मार्ग में अनेक लोगो ने अपने-अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और घरों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यप्रवर अलिपुरम् रोड़ पर अवस्थित वेंकटेश्वरा मेटा के निकट स्थित तेरापंथ भवन में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन हुए। विशाखापट्टनम् तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सिद्धकरण आंचलिया ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान करते हुए पावन संबोध प्रदान किया। भवन का अवलोकन करने के उपरान्त आचार्यप्रवर पुनः उसी मार्ग से प्रवास स्थल की ओर प्रस्थित हुए। अब तक आसमान में बादल प्रायः छिन्न-भिन्न हो चुके थे और प्रखर सूर्य ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। चिलचिलाती धूप में भी पूज्यप्रवर समत्वभाव से गतिमान थे। आचार्यप्रवर करीब ११.८ कि.मी. की यात्रा सम्पन कर पुनः अपने प्रवास स्थल में पधारे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पहले महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ। साध्वीवर्याजी ने पूज्यप्रवर द्वारा रचित गीत 'हे प्रभो! तुम ही हमारे नाथ हो' का संगान किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'नमस्कार महामंत्र जैन शासन में प्रतिष्ठा प्राप्त महामंत्र है। कितने-कितने अनुयायी इसका प्रतिदिन पाठ करते हैं। जप साधना का एक सुगम और सुन्दर प्रयोग है। अध्ययन के लिए पुस्तक और प्रकाश दोनों की आवश्यकता हो सकती है, किन्तु जप में प्रकाश का होना आवश्यक नहीं होता। मंत्र को अपना एक मित्र बना लेना चाहिए। एक मंत्र को अपना विशेष

मंत्र बना लेना चाहिए। जब कभी समय मिल जाए, मन ही मन उसका जप करना चाहिए, ताकि मन शुद्ध रह सके। पवित्र मंत्र के जप से चेतना पर अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। कष्ट, विकट स्थिति में पवित्र इष्ट का जप करने से मनोबल और अभय का भाव पुष्ट हो सकता है, विघ्न निवारण भी हो सकता है।

मंत्र के अर्थ का ज्ञान हो तो और ज्यादा लाभ हो सकता है। अर्थ के साथ श्रद्धा हो तो और भी ज्यादा अच्छा लाभ हो सकता है। नमस्कार महामंत्र की एक माला यथासंभव प्रतिदिन नाश्ते से पहले-पहले हो जाए तो एक अच्छा उपक्रम होता है। दूध, ब्रेड आदि शरीर का नाश्ता है। जप चेतना का नाश्ता है। आध्यात्मिक भावना से किया जाने वाला पवित्र मंत्र का जप आध्यात्मिक दृष्टि से लाभदायक हो सकता है।

आज आंध्रप्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री घंटा श्रीनिवास ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

आध्यात्मिक आभूषण पहनो

२२ अप्रेल। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और साध्वीवर्याजी के उद्‌बोधन हुए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में 'संत और किशोर' के रूपक के माध्यम से प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'बाह्य आभूषण आध्यात्मिक दृष्टि से भार होते हैं। ये आभूषण मात्र शरीर को सुशोभित करने वाले हो सकते हैं। आत्मा की शोभा इनसे नहीं बढ़ती। शरीर तो कभी जीर्ण-शीर्ण भी हो सकता है। बाह्य आभूषण अधिकतम इस जीवन तक साथ रह सकते हैं। आन्तरिक आभूषण इस जीवन में भी साथ रह सकते है और आगे भी साथ में रह सकते हैं।

कंगन हाथ का बाह्य आभूषण है, हाथ का आध्यात्मिक आभूषण है श्लाघ्य दान। दान देने की भावना होना भी लाभदायक होता है। खाना खाने से पहले साधु को दान देने की भावना रखना भी महत्त्वपूर्ण होता है। सिर का आभूषण है गुरु के चरणों में प्रणाम करना। मुख का आध्यात्मिक आभूषण है सत्यवाणी। छल कपटपूर्वक अयथार्थ बात कहना आत्मा को मलिन बनाने वाला होता है। यथार्थ भाषण आत्मा का आभूषण है। सच्ची बात भी अप्रिय नहीं होनी चाहिए। यथार्थ और प्रिय वाणी महत्त्वपूर्ण होती है, वह मुख का आभूषण है। कान का आंतरिक है आभूषण है शास्त्रवाणी का श्रवण। हृदय में पवित्र भावना रहना हृदय का आभूषण है। भुजाओं का आभूषण है पौरुष। ये छह आभूषण जिस आदमी के जीवन में आते हैं, उसकी आत्मा अच्छी बन सकती है।'

मन में हों कल्याणकारी संकल्प

२३ अप्रेल। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और साध्वीवर्याजी के उद्‌बोधन हुए।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में संकल्प का बड़ा महत्त्व होता है और संकल्प भी अच्छा होना चाहिए। मन कल्याणकारी संकल्पों वाला रहना चाहिए। संकल्प अच्छे होते हैं तो अच्छे गुण जीवन में आ सकते हैं। आदमी गुणों से साधु (सज्जन) और अगुणों से असाधु (असज्जन) बनता है। आदमी गुणों को ग्रहण करता जाए और अगुणों को छोड़ता जाए, यह काम्य है।

चार शब्द हैं- दुरात्मा, सदात्मा, महात्मा और परमात्मा। जिसमें दुर्गुण होते हैं, वह दुरात्मा होता है। सदाचारी गृहस्थ सदात्मा होता है। जो महाव्रतधारी साधु होता है, वह महात्मा होता है। जो सभी कर्मो का नाश कर शुद्धात्मा स्वरूप को प्राप्त कर लेता है, वह परमात्मा होता है। परमात्मा बनना बहुत-बहुत ऊंची बात है। महात्मा बनना भी हर किसी के लिए संभव नहीं होता है। गृहस्थ को सदात्मा तो बनना ही चाहिए। उसे दुरात्मा

बनने से बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

आचार्य सोमप्रभ सूरि ने सूक्ति मुक्तावली ग्रन्थ में सदात्मा का चरित्र चित्रण करते हुए आठ बातें बताई गई हैं-

१. जो दूसरों की गलतियों को नहीं फैलाता।

२. जो दूसरों के सद्गुणों के प्रति प्रमोद भाव रखता है, उन्हें महत्त्व देता है, यथौचित्य उन गुणों की प्रशंसा करता है।

३. जो दूसरे ऋद्धिमान लोगों को देखकर ईर्ष्या नहीं, संतुष्टि का अनुभव करता है।

४. जो दूसरों के कष्ट में सहानुभूति करता है।

५. जो अपने मुख से अपनी प्रशंसा नहीं करता।

६. जो नीति मार्ग को नहीं छोड़ता।

७. जो औचित्य का उल्लंघन नहीं करता।

८. जो अप्रिय बात में भी असहिष्णु नहीं बनता, गंभीरता रखता है।

ये आठ बातें जीवन में आ जाती हैं तो मानना चाहिए कि आदमी सज्जन बन गया है।'

स्थानीय विधायक श्री बेल्लमगुड़ी रामकृष्ण बाबू ने प्रवचन के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम में विशाखापट्टनम् तेरापंथ महिला मंडल की रजत जयंती के संदर्भ में भी उपक्रम समायोजित हुआ। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा और विशाखापट्टनम् तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सज्जनदेवी हिरावत ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। रजत जयंती के संदर्भ में प्रकाशित स्मारिका पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई। तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने गीत का संगान किया। महिला मंडल की रजत जंयती के संदर्भ में उपस्थित जिला परिषद् की अध्यक्ष श्रीमती लालमभवानी तथा गोर्मेंट मेंटल हेल्थ हॉस्पिटल की सुपरिटेंडेंट श्रीमती राधारानी ने भी अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए।

पूज्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'तेरापंथ महिला मंडल, विशाखापट्टनम् की रजत जंयती का प्रसंग है, न केवल महिला मंडल की बाइयो में, अपितु अन्य तेरापंथी लोगों में भी शनिवार को सायं सात बजे से आठ बजे के बीच यथासंभव सामायिक अनुष्ठान हो, ऐसा प्रयास काम्य है। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों के संस्कार वर्धमान हों और ज्ञानशाला में ज्ञानार्थियों की संख्या भी वृद्धिगंत हो, इसका भी समुचित प्रयास होना चाहिए। महिला मंडल की बाइयां यह भी ध्यान दें कि अपने-अपने परिवारों में कैसे अच्छापन रह सके। परिवारों में बुराइयां न आएं, नशा न हो, कलह न हो, तलाक-उत्पीड़न जैसी स्थितियां भी परिवारों में न हों। इस प्रकार परिवारों का अन्दरुनी माहौल भी अच्छा रहे। इसके प्रति भी बाइयों को जागरूकता रखनी चाहिए। तत्त्वज्ञान और तेरापंथ दर्शन का भी अध्ययन करने का प्रयास करना चाहिए। विशाखापट्टनम् की बहनें उपासिकाएं बनें, इस पर भी ध्यान देना चाहिए। जो बहनें सुमंगल साधना के अर्ह हों, उन्हें साध्वीवर्या से सुमंगल साधना की जानकारी लेकर उसे स्वीकार करने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। विशाखापट्टनम् का तेरापंथ महिला मंडल साध्वीप्रमुखाजी के पथदर्शन में आध्यात्मिक विकास करता रहे। मंगलकामना।

पूज्यप्रवर ने महिला मंडल की सदस्याओं द्वारा प्रस्तुत निरवद्य संकल्पों का उन्हें त्याग करवाया। रजत जंयती से संबंधित उपक्रम का संचालन विशाखापट्टनम् तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री श्रीमती वंदना विनायकिया ने किया।

आज आंध्रप्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश तथा वर्तमान में नेशनल बेकवर्ड क्लास

कमिशन के चेयरमेन श्री ऐश्वर्या एवं पश्चिम विशाखापट्टनम् के विधायक श्री गणबाबू ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

रात्रि में विशाखापट्टनम् के बोहरा मुस्लिम समाज के गुरु श्री शेख जूजर तथा बोहरा मुस्लिम कम्युनिटि के अध्यक्ष श्री अखिल राजा आदि कई लोग भी पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की। वार्तालाप के दौरान प्रसंगवश पूज्यप्रवर ने मुम्बई के शेफी महल में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और बोहरा मुस्लिम धर्मगुरु शैयदना साहब के मिलन का जिक्र किया तो श्री जूजर बोले--'हां, हमें भी याद है। उस मिलन का विडियो हमारी कम्युनिटि में सभी जगह दिखाया गया था। दो महापुरुषों के मिलन को देखकर हमें बहुत खुशी और गर्व की अनुभूति हुई।'

उल्लेखनीय मार्ग सेवा

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कोलकाता से विशाखापट्टनम् तक करीब १८६७ कि.मी. की यात्रा की। यद्यपि सीधे मार्ग से यह दूरी मात्र लगभग ८४६ कि.मी. की ही थी, किन्तु श्रदालुओं की भावना को परितृप्त करने और जनोद्धार के लिए भक्तवत्सल आचार्यप्रवर ने करीब १०५१ कि.मी. की अतिरिक्त यात्रा की। मार्गगत, स्थानगत और मौसमगत कठिनाइयों के बावजूद इस यात्रा के दौरान सैंकड़ों-सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने मार्गसेवा का लाभ लिया। मार्ग सेवा करने वाले डेरों की संख्या भी अच्छी रही। एक सप्ताह अथवा उससे अधिक समय तक डेरे के रूप में मार्गसेवा करने वाले व्यक्तियों/समूहों के नाम इस प्रकार हैं-

चार मास व उससे अधिक

१. छोटीबाई राजेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र डागा, रायपुर
२. देवराज मूलचंद नाहर, बेंगलुरु
३. भीखमचन्द राजेश ललित नखत, टमकोर-हैदराबाद
४. रतिराम ताराचंद सत्यनारायण जैन, टिटिलागढ़
५. आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, चेन्नई
६. अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद
७. अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
८. तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम

दो मास व उससे अधिक

१. महेन्द्र सरला श्रीश्रीमाल, बैंगलुरु
२. पुखराज अशोककुमार परमार, चैन्नई
३. शिवप्रसाद मनोजकुमार जैन, सिंधीकेला व धापोदेवी सुनीलकुमार जैन, केसिंगा
४. चंपालाल शोभाबाई दूगड़, पक्षीतीर्थ व महावीर इन्द्राबाई दूगड़, पेराम्बकम्
५. आचार्य महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति, विशाखापट्टनम्
६. तेरापंथी सभा, इन्दोर
७. तेरापंथी सभा, यशवन्तपुर, बेंगलुरु
८. तेरापंथी सभा, सिंवाची-मालाणी
९. ओडिशा प्रान्तीय तेरापंथी सभा

एक मास व उससे अधिक

१. आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति, कटक
२. तेरापंथी सभा, नेपाल-बिहार
३. तेरापंथी सभा, केसिंगा
४. सरदारशहर परिषद, कोलकाता
५. आंचलिया परिवार, सेंथिया
६. गौतम सुरेश रमेश कोठारी, बेंगलुरु
७. चन्दनमल मलफुरसिंह जैन, कांटाबांजी
९. प्रकाशचन्द शंकरलाल सिंघवी, मुम्बई
८. संगीतकुमार लक्ष्मीनारायण जैन, टिटिलागढ़-नवरंगपुर
१०. मामा-भाणेज, सिरियारी-बेंगलुरु
११. पेटलावद क्षेत्र
१२. बोहरा परिवार, चेन्नई

पन्द्रह दिन व उससे अधिक

१. आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, कोलकाता २. बोहरा परिवार, चेन्नई

३. धर्मचंद लोढ़ा परिवार, चासबोकारो
४. शुभकरण चोरड़िया, नोखा
५. अमरचन्द सुमन डागा, विराटनगर उषा जैन, जगराओं
६. मूलचन्द बोथरा परिवार, बीकानेर
७. सुन्दरलाल शांतिलाल लोढ़ा, कटक
८. पुखराज डागा परिवार, दिल्ली
९. नवीन जैन, टिटिलागढ़
१०. मगनलाल संतोषकुमार जैन, टिटिलागढ़
११. मदनलाल जैन, पटनागढ़, नयन जैन, रायपुर व सुनील जैन, सिंधीकेला
१२. कुन्दनलाल पदमसेन जैन, केसिंगा व जयकिशन धर्मपाल जैन, बेलपाड़ा

सात दिन व उससे अधिक

१. तेरापंथी सभा, उत्केला
२. तेरापंथी सभा, भुवनेश्वर
३. अभ्युदय, मुम्बई
४. राधेश्याम नवीनकुमार जैन, टिटिलागढ़
५. बीरबल प्रसाद चन्दमल जीतमल जैन, कांटाबांजी
६. खजांचीलाल अरुणकुमार जैन, कांटाबांजी
७. लहरापदरिया परिवार व जमालपुरिया परिवार, कांटाबाजी
८. आंचलिया परिवार, विशाखापट्टनम्
९. आंचलिया परिवार, चेन्नई-सिरकाली

श्री ख्यालीलाल तातेड़ आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी के अध्यक्ष निर्वाचित

२४ अप्रेल को विशाखापट्टनम् में आयोजित आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी की साधारण सभा में श्री ख्यालीलाल तातेड़ (मुम्बई) संस्थान के वर्ष २०१८-२०२१ के कार्यकाल हेतु अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इस आशय की घोषणा मुख्य चुनाव अधिकारी श्री लूणकरण छाजेड़ ने की। साधारण सभा में निर्वाचित ट्रस्टीगण इस प्रकार है-

१. तेजराज पूनमिया	चेन्नई	२. मूलचंद नाहर	बेंगलुरु
३. प्यारेलाल पीतलिया	चेन्नई	४. सुकनराज परमार	चेन्नई
५. भीखमचन्द नखत	सिकन्दराबाद	६. विमलराज सिंघवी	जोधपुर
७. दिलीप बैद	जयपुर	८. जुगराज नाहर	चेन्नई
९. सूरजमल जैन सूर्या	धुलिया	१०. विनोद घोड़ावत	जयसिंहपुर
११. नानालाल छाजेड़	मुम्बई	१२. निर्मलकुमार गोखरू	भीलवाड़ा
१३. हनुमानचंद लूंकड़	सिंधनूर	१४. मखनलाल गोयल	सिरसा
१५. दीपचंद नाहर	बेंगलुरु	१६. धर्मीचन्द धोका	बेंगलुरु
१७. महेन्द्रकुमार दक जैन	बेंगलुरु	१८. अनिल के. चण्डालिया	सूरत
१९. गौतमचन्द सेठिया	चेन्नई	२०. गणपतराज डागा	चेन्नई
२१. भंवरलाल जैन कर्णावट	मुम्बई		

चुनाव प्रक्रिया में श्री हंसराज बेताला सह चुनाव अधिकारी के रूप में रहे। नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं ट्रस्टीगण ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया।

पूज्यप्रवर की अनुज्ञा से तोषाम में मुनि किशनलालजी ने बालक मुकुल को दी मुनि दीक्षा

२५ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार तोषाम (हरियाणा) में शासनश्री मुनि किशनलालजी ने तोषाम के बालक मुकुल जैन को मुनि दीक्षा दी। नवदीक्षित मुनि का नाम मुनि मार्दवकुमार रखा गया। आचार्यप्रवर ने इस समारोह के संदर्भ में प्रदत्त अपने मंगल संदेश में नवदीक्षित मुनि को

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आत्मसाक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में साध्वी सुप्रभाजी आदि साध्वियां भी उपस्थित रहीं। भिवानी- महेन्द्रगढ़ के सांसद चौधरी धर्मवीर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

बाल दीक्षा के विरुद्ध वाद और शिकायत खारिज

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कटक मर्यादा महोत्सव के अवसर पर शासनश्री मुनि किशनलालजी को निर्देश प्रदान किया कि वे २५ अप्रेल २०१८ को तोषाम में बालक मुकुल को मुनि दीक्षा प्रदान करें। दीक्षा समारोह की तैयारियां चल रही थीं, इस बीच स्थानीय कुछ लोगों ने १३ अप्रेल २०१८ को दीक्षा के विरुद्ध हरियाणा राज्य बाल संरक्षण आयोग में दीक्षा को अवैध घोषित करने हेतु शिकायत करते हुए दीक्षार्थी माता-पिता एवं धर्मसंघ पर गंभीर आरोप लगाए। कुछ अन्य स्थानीय लोगों ने १७ अप्रेल २०१८ को दीक्षा पर रोक लगाने हेतु एडिशनल सिविल जज सीनियर डिविजन तोषाम-भिवानी में मुकदमा दायर कर दिया। इन दोनों कार्य के अवांछनीय प्रचार-प्रसार के कारण ऊहापोह की स्थिति बन गई।

ऐसी स्थिति में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा, हरियाणा प्रान्तीय तेरापंथ सभा और तोषाम तेरापंथी सभा ने अपने दायित्व का सजगता एवं निष्ठा के साथ निर्वहन करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ का सक्षम प्रतिनिधित्व किया। फलस्वरूप माननीय न्यायालय ने १६ अप्रेल २०१८ को सुनवाई के उपरान्त वाद को खारिज कर दिया। तत्पश्चात् कार्यकर्ताओं ने हरियाणा राज्य बाल सरंक्षण आयोग की चेयरपर्सन श्रीमती ज्योति बेड़ा और इस संदर्भ में जांच हेतु नियुक्त आयोग के सदस्य सुनील वर्मा से मिलकर शिकायतकर्ताओं के सभी आरोपों के सटीक और तर्कसंगत समाधान प्रस्तुत किए।

जांच के उपरांत आयोग ने शिकायतकर्ताओं के सभी आरोपों को निराधार पाया तो २२ अप्रेल २०१८ को आयोग ने यह फैसला दिया की दीक्षा शास्त्र सम्मत एवं संविधान सम्मत है। प्रशासन द्वारा इसमें किसी भी प्रकार की बाधा नहीं पहुंचाई जानी चाहिए। इस आयोजन में प्रशासन का पूरा सहयोग रहना चाहिए।

दीक्षा समारोह के दौरान हरियाणा राज्य बाल संरक्षण अधिकार आयोग के निर्देश पर बाल कल्याण समिति भिवानी की सदस्या श्रीमती मीना शर्मा भी निरीक्षण के लिए उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के उपरान्त उन्होंने भी अपनी कार्यवाही रिपोर्ट में शिकायतकर्ताओं के सभी आरोपों को नकारा। इस प्रकार परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल आशीर्वाद तथा महासभा, हरियाणा प्रान्तीय सभा और तोषाम तेरापंथी सभा के कार्यकर्ताओं की सजगता, तत्परता और निष्ठा से दीक्षा समारोह निर्विघ्न और गरिमामय रूप में आयोजित हुआ।

दीक्षा समारोह की घोषणा

२५ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने नवम पदाभिषेक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान घोषणा करते हुए कहा--चेन्नई में ११ नवम्बर २०१८ (कार्तिक शुक्ला चतुर्थी) को प्रातः ६ बजे से प्रारम्भ होने वाले मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में दीक्षा समारोह आयोजित करने और उस समारोह में मुमुक्षु धरती (सूरत) तथा मुमुक्षु प्रज्ञा (चेन्नई) को समणी दीक्षा देने का भाव है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक-संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला